24 OCT 12 2026.qxd 23-10-2026 22:56 Page 1

मां बनने से बिल्कुल अलग इंसान बन गयी हूं-कियारा आडवाणी



बेटी साराया के जन्म के बाद कियारा आडवाणी की जिंदगी में नाटकीय बदलाव आया। मां बनने के बाद से अभिनेत्री लाइमलाइट से काफी दूर रही हैं। हाल ही में वह अपनी आगामी फिल्म के प्रमोशन के लिए काम पर लौटी हैं । एक इंटरव्यू में कियारा आडवाणी ने प्रसव की भावनात्मक वास्तविकताओं और मातृत्व ने उन्हें भावनात्मक और मानसिक रूप से कैसे बदल दिया, इस बारे में खुलकर बात की। अभिनेत्री ने कहा, एक व्यक्तित्व के रूप में आप में सब कुछ बदल जाता है। मुझे लगता है कि मां बनने से पहले और बाद में, मैं हर तरह से एक बिल्कुल अलग इंसान बन गई हूं। और मैंने इसे स्वीकार भी कर लिया है। आप जो भी करते हैं, उसमें बहुत अधिक उद्देश्य होता है। मैं लगातार अपनी बेटी के लिए एक उदाहरण बनने के बारे में सोचती रहती हूं। अगर मैं ऐसा करूं तो मेरी बेटी को कैसा लगेगा? उन्होंने आगे कहा। मातृत्व के बारे में बात करते हुए कियारा आडवाणी ने कहा कि एक मां को दोहरी भूमिका निभानी पड़ती है। अपने नवजात शिशु की देखभाल करने के अलावा, वह घर का कामकाज भी संभालती है। उन्होंने स्वीकार किया कि एक माँ या गृहिणी जितना काम करती है, उसकी कल्पना हममें से कोई नहीं कर सकता। मैं ऐसी इंसान हूँ जिसने अपनी पूरी जिंदगी हर दिन काम किया है। मैंने बहुत व्यस्त शिफ्टें की हैं। मैंने बहुत संघर्ष किया है, अभिनेत्री ने आगे कहा। माता-पिता बनने के बाद, उन्होंने कहा कि वह कुछ समय के लिए अवकाश लेना चाहती हैं। उन्होंने समझाया, अवकाश लेने से कहीं अधिक, मैं वर्तमान में रहना चाहती थी, और साथ ही यह भी बताया कि वह अभी भी भविष्य की योजना बना रही हैं, बैठकों में भाग ले रही हैं और प्रस्तुतियों में शामिल हो रही हैं। नई मां ने आगे कहा कि मातृत्व की इस यात्रा में और घर से काम करने के परिदृश्य में भागदौड़ दोगुनी हो गई है, क्योंकि अब वह किसी और के जीवन के लिए जिम्मेदार है। अभिनेत्री ने बताया कि माता-पिता बनने के बाद व्यक्ति का नजरिया बदल जाता है। वे हर चीज को एक नए नजरिए से देखते हैं। उन्होंने आगे कहा, अभिनय के क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि अन्य क्षेत्रों में भी, आप अपने भविष्य के बारे में अलग-अलग विचार रखते हैं। इस दौर में आप अपने वर्तमान काम के अलावा अन्य चीजों के बारे में भी गहराई से सोचने लगते हैं। कियारा आडवाणी ने अपनी बेटी के जन्म के बाद प्रसवोत्तर परिवर्तनों के अपने अनुभव के बारे में खुलकर बात की। उन्होंने कहा, प्रसवोत्तर अवस्था के बारे में और अधिक चर्चा होनी चाहिए। प्रसवोत्तर अवस्था में हर किसी का अनुभव अलग होता है। यह शारीरिक और भावनात्मक रूप से अलग-अलग तरह से प्रभावित करती है। अभिनेत्री ने अचानक बिना किसी कारण के त्वचा संबंधी समस्या से जूझने की बात याद करते हुए कहा, पहले तो मुझे लगता था, हे भगवान! ये सब क्यों हो गया! लेकिन अब मेरी जिंदगी में कोई भी चीज मुझे रोक नहीं सकती, और मैं जीना जारी रखूंगी। कियारा आडवाणी ने आगे बताया कि मातृत्व ने उन्हें खुद के प्रति दयालु होना सिखाया। पहचान में बहुत बड़ा बदलाव आता है। यह एक बिल्कुल नई दुनिया होती है। उस दौर में, खुद को समझने और समझने में समय लगता है। मुझे तो छह महीने लग गए! क्योंकि आपको एहसास होता है कि आप दूसरों के लिए इतना कुछ कर रही हैं कि आप खुद से अपने रिश्ते को, खुद से कही जाने वाली बातों को भूल जाती हैं, उन्होंने समझाया। अभिनेत्री ने स्वीकार किया कि वह हमेशा दूसरों पर ही ध्यान केंद्रित करती रही थीं, जिसके कारण उन्हें खुद पर ध्यान देने का बहुत कम समय मिलता था, लेकिन मातृत्व ने उनके दृष्टिकोण को बदल दिया। उन्होंने आगे कहा, और यह मेरे लिए सबसे अच्छा काम है जो मैंने किया है। 34 साल बाद, मैंने सीमाएं तय करना सीख लिया है। मैंने हर बात पर खुद से ज़रूरत से ज़्यादा आलोचनात्मक बातचीत न करना सीख लिया है। मैंने डर पर ध्यान न देना सीख लिया है। और ये सारी बातें मुझे इन छह महीनों में खुद को सिखानी पड़ी हैं। कियारा आडवाणी ने साराया के जन्म के महज पांच महीने बाद पिछले दिसंबर में काम पर वापसी की। उन्होंने यह भी बताया कि उन्होंने अपनी गर्भावस्था के दौरान सात महीने तक फिल्म टॉक्सिक पर काम किया , जिसमें कई दमदार एक्शन सीक्वेंस की शूटिंग भी शामिल थी।

अब भागदौड़ दुगुनी हो गयी है। एक व्यक्ति के रूप में आपमें सब कुछ बदल जाता है। मुझे लगता है कि मां बनने से पहले और बाद में मैं हर तरह से एक बिल्कुल अलग इंसान बन गयी हूं और मैंने इसे स्वीकार भी कर लिया है, कियारा आडवाणी ने बताया।



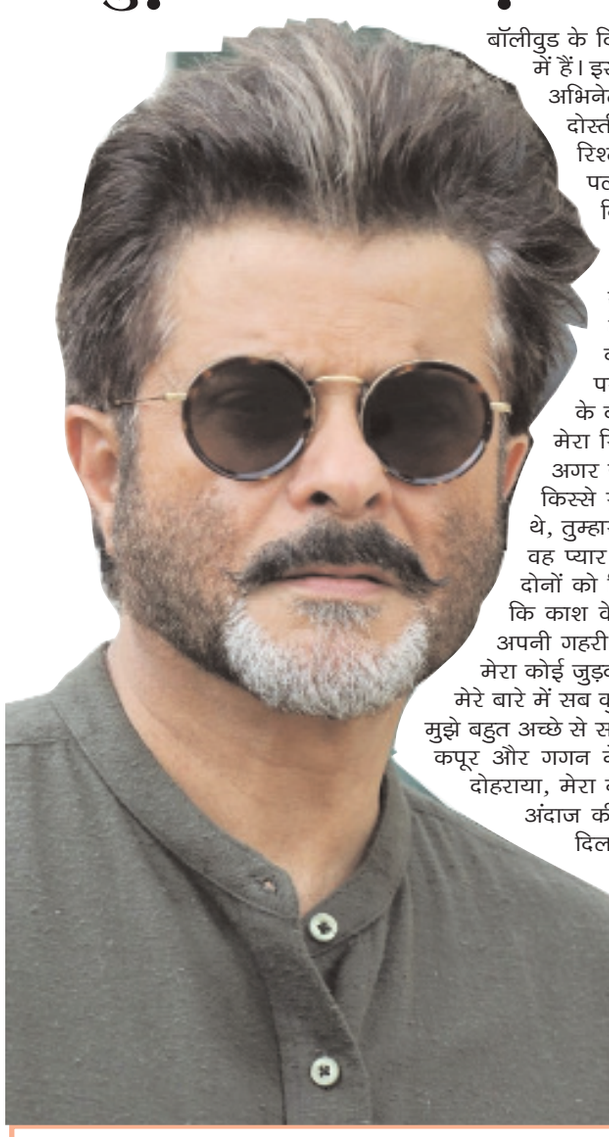
सपनों की दुनिया

गुरुदेव श्री श्री रवि शंकर

सपनों के पाँच प्रकार होते हैं। पहला प्रकार उन सपनों का है, जो हमारे बीते हुए अनुभवों से बनते हैं। मन पर जो संस्कार अंकित हो जाते हैं, वही सक्रिय होकर सपनों का रूप ले लेती हैं। यह सपनों का पहला प्रकार है। दूसरा प्रकार हमारी इच्छाओं और भय से जुड़ा होता है। जिन इच्छाओं की पूर्ति अभी तक नहीं हुई है या जो डर हमारे भीतर छिपे हुए हैं, वे सपनों के रूप में प्रकट होते हैं। यदि आपको प्यास लगी है, लेकिन आलस्य के कारण आप पानी पीने नहीं उठे और विश्राम करते रहे, तो सपने में आप स्वयं को पानी पीते हुए देख सकते हैं। इसी प्रकार, यदि किसी बात का भय मन में है, तो वही भय सपने के रूप में दिखाई देता है। तीसरा प्रकार उन सपनों का है, जिनमें भविष्य की झलक मिलती है। जो घटनाएँ अभी घटी नहीं हैं और जिनके बारे में हमें कोई जानकारी भी नहीं है, वे कभी-कभी सपनों में दिखाई दे सकती हैं। यह एक प्रकार की दूरदृष्टि होती है।चौथा प्रकार उन सपनों का है, जिनका संबंध आपसे नहीं, बल्कि उस स्थान से होता है जहाँ आप सो रहे होते हैं। किसी नए स्थान पर सोने से वहाँ के वातावरण, ऊर्जा या प्रभाव के कारण अनजान चेहरे, अनजानी भाषाएँ या अपरिचित दृश्य सपनों में दिखाई दे सकते हैं। पाँचवाँ प्रकार इन सभी का मिश्रण होता है। जैसे आप सपने में देखते हैं कि आप ट्रेन में बैठे हैं, फिर वही ट्रेन पानी में तैरने लगती है और नाव बन जाती है। ऐसे सपने कई तत्वों का सम्मिश्रण होते हैं। अधिकांश सपने पाँचवें प्रकार के होते हैं। लगभग 90न सपने मिश्रित प्रकृति के होते हैं। अतः उनके बारे में अधिक सोचने की आवश्यकता नहीं है। यदि कोई सुंदर सपना आया तो अच्छा है, प्रसन्न हो जाइए। यह पूरा संसार एक सपना है। कल जो कुछ भी आपने अनुभव किया, वह उस समय आपको बहुत वास्तविक लगा होगा, लेकिन आज वह सब एक सपने जैसा प्रतीत होता है । आप स्कूल गए, कॉलेज गए, क्या वह सब अभी इस क्षण मौजूद है? क्या वह किसी सपने से अधिक है? जब तुम सच में जागते हो, तब समझ में आता है कि सब कुछ सपने जैसा ही था। जो समाप्त हो चुका। जो भी क्षण बीत गया, वह सपना है। यह वर्तमान क्षण भी एक सपना है। भविष्य के बारे में जो कल्पनाएँ हैं- कल या परसों की - वे भी सपने ही हैं। ज्ञान यह है कि पूरे जीवन को एक सपने की तरह देखा जाए।

जो भी क्षण बीत गया, वह सपना है। यह वर्तमान क्षण भी एक सपना है। भविष्य के बारे में जो कल्पनाएँ हैं- कल या परसों की - वे भी सपने ही हैं। ज्ञान यह है कि पूरे जीवन को एक सपने की तरह देखा जाए।

सतीश कौशिक के साथ रिश्ता सिर्फ पेशेवर जुड़ाव से कहीं बढ़कर था-अनिल कपूर



बॉलीवुड के दिग्गज अभिनेता अनिल कपूर अपने शो को लेकर चर्चा में हैं। इस शो के अपकमिंग एपिसोड में अनिल कपूर ने दिवंगत अभिनेता-फिल्म निर्माता सतीश कौशिक के साथ अपनी गहरी दोस्ती को याद किया है। उन्होंने बताया कि उनके बीच का रिश्ता सिर्फ पेशेवर जुड़ाव से कहीं बढ़कर था। यह भावुक पल तब आया जब शो के एक प्रतियोगी गगन ने बताया कि लोग अक्सर उनकी तुलना दिवंगत अभिनेता से करते हैं। गगन की शक्ल सतीश कौशिक से काफी मिलती-जुलती है। गगन ने यह भी बताया कि टीवी शो सुमित संभल लेगा की शूटिंग के दौरान दिल्ली में उनकी मुलाकात सतीश कौशिक से हुई थी। इस बात ने अनिल कपूर को अपने दोस्त से जुड़ी पुरानी यादों में खो जाने पर मजबूर कर दिया। सतीश कौशिक के साथ अपने रिश्ते के बारे में बात करते हुए अनिल कपूर ने कहा, उनके साथ मेरा रिश्ता कैसा था, इसे मैं शब्दों में बयां नहीं कर सकता। अगर यह शूटिंग 70 मिनट की भी होती, तो भी उनके बारे में किस्से सुनाने के लिए कम पड़ जाती। वे मुझसे अक्सर कहते थे, तुम्हारा टैलेंट लाजवाब है। अनिल कपूर ने यह भी बताया कि वह प्यार से सतीश कौशिक को डैनी डेविटो कहकर बुलाते थे। दोनों को ट्विन्स फिल्म बहुत पसंद थी और वे अक्सर सोचते थे कि काश वे कभी साथ में जुड़वां भाइयों का किरदार निभा पाते। अपनी गहरी दोस्ती को याद करते हुए अनिल कपूर ने कहा, अगर मेरा कोई जुड़वां भाई हो सकता है, तो वह सिर्फ सतीश थे, क्योंकि वह मेरे बारे में सब कुछ जानते थे। मेरा गुस्सा, मेरी खुशी, हर एक बात। वह मुझे बहुत अच्छे से समझते थे। बातचीत तब और मजेदार हो गई जब अनिल कपूर और गगन ने मंच पर सतीश कौशिक का एक यादगार डायलॉग दोहराया, मेरा नाम है कैलेंडर, मैं चला किचन के अंदर! गगन के इस अंदाज की तारीफ करते हुए अनिल कपूर ने कहा, आपने मेरा दिल जीत लिया है। इसके बाद उन्होंने मजाक में दर्शकों से कहा कि अगर किसी के पास ट्विन्स फिल्म से प्रेरित कोई फिल्म बनाने के लिए पैसे हों, तो उन्हें और गगन को जुड़वां भाइयों के रोल में कास्ट करें। सतीश कौशिक का 9 मार्च 2023 को निधन हो गया था। वह एक बेहतरीन अभिनेता होने के साथ निर्देशक, निर्माता, एडिटर और स्क्रीनराइटर थे। वह अनिल कपूर के साथ मिस्टर इंडिया, राम लखन और जमाई राजा जैसी फिल्मों में नजर आए थे।

हमले के बाद शूटिंग पर लौटे टाइगर श्राफ

मुंबई के जुहू में कार पर हुई गोलीबारी की घटना के महज दो दिन बाद अभिनेता टाइगर श्रॉफ काम पर वापस लौट आए हैं। टाइम्स नाउ की रिपोर्ट के अनुसार, 18 अक्टूबर को हुए हमले के बाद टाइगर ने 20 अक्टूबर से अपनी अपकमिंग फिल्म लग जा गले की शूटिंग दोबारा शुरू कर दी है। यह एक रोमांटिक-एक्शन फिल्म है, जिसमें टाइगर पहली बार जाह्नवी कपूर और लक्ष्य के साथ स्क्रीन शेयर करते नजर आएंगे। घटना के बाद पुलिस जांच जारी है। इसी बीच टाइगर ने अपने वर्क कमिटमेंट को पूरा करते हुए सेट पर वापसी की है। फिल्म लग जा गले का निर्माण करण जौहर के धर्मा प्रोडक्शंस बैनर तले किया जा रहा है। फिल्म का निर्देशन राज मेहता कर रहे हैं, जो इससे पहले गुड न्यूज, जुग जुग जियो और सेल्फी जैसी फिल्मों का निर्देशन कर चुके हैं। चर्चा है कि यह फिल्म मई 2027 में सिनेमाघरों में रिलीज हो सकती है, हालांकि रिलीज डेट को लेकर आधिकारिक घोषणा होना बाकी है। यह बयान 18 अक्टूबर की फायरिंग की घटना के दो दिन बाद आया। रिपोर्ट्स के मुताबिक, टाइगर उस दिन शाम करीब 7 बजे मुंबई के एक फुटबॉल क्लब से निकल रहे थे। घटना के वीडियो में हमलावर उनकी कार पर पास से फायरिंग करते दिखे थे। टाइगर इस घटना में सुरक्षित बच गए। हालांकि, घटना में उनके ड्राइवर और एक राहगीर घायल हुए थे। टाइगर पर फायरिंग करने वाले आरोपियों ने बताया है कि उन्होंने पहले अमिताभ बच्चन, सलमान खान, आमिर खान और अक्षय कुमार की रेकी की थी, लेकिन सिक्योरिटी ज्यादा होने के कारण प्लान बदल दिया था। आरोपियों के साथ एक चौथा युवक भी था, लेकिन वह हमले से एक रात पहले सिगरेट पीने के बहाने होटल से भाग गया। वहीं टाइगर पर फायरिंग के मामले में अब तक 6 लोगों को गिरफ्तार किया गया है। सबसे पहले पुलिस ने फायरिंग के मामले में बिहार के ऋतिक उर्फ रोशन, हरियाणा के रेहान और एक नाबालिग को कोटा से गिरफ्तार किया था। रेहान के दोस्त समीर और बोनी उर्फ रौनक भी पुलिस हिरासत में हैं। इसके बाद दिल्ली पुलिस ने हथियारों की सप्लाई में भूमिका के आरोप में कुणाल, सुमित, राधा और बबीता को गिरफ्तार किया। राधा और बबीता को नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से पकड़ा गया, जबकि कुणाल और सुमित को सोनीपत से हिरासत में लिया गया। मुंबई पुलिस ने पूछताछ के लिए चारों का तीन दिन का ट्रांजिट रिमांड हासिल किया है।

घटना के बाद पुलिस जांच जारी है। इसी बीच टाइगर ने अपने वर्क कमिटमेंट को पूरा करते हुए सेट पर वापसी की है।



रणबीर की रामायण पर लक्ष्मी जी की कृपा

बॉक्स ऑफिस पर किस्मत चमकने के लिए सिर्फ बड़े सितारे और भारी-भरकम बजट ही काफी नहीं होते, दर्शकों का प्यार भी जरूरी होता है। इन दिनों रणबीर कपूर की रामायण की एडवांस बुकिंग के आंकड़े कुछ ऐसी ही कहानी बयां कर रहे हैं. रिलीज से पहले ही फिल्म ने टिकट बिक्री में प्रभास की आदिपुरुष को पीछे छोड़ दिया है। एक तरफ रामायण पर मां लक्ष्मी जी की कृपा बरसती दिख रही है। दूसरी तरफ राम बने प्रभास की आदिपुरुष को रिलीज के बाद दर्शकों की नाराजगी झेलनी पड़ी थी। ऐसे में दोनों फिल्मों के शुरुआती आंकड़ों की तुलना ने एक बार फिर बॉक्स ऑफिस पर आस्था, उम्मीद और दर्शकों की पसंद की चर्चा छेड़ दी है। बॉक्स ऑफिस पर अभी रामायण रिलीज होने में वक्त है, लेकिन रणबीर कपूर और यश की रामायण ने टिकट खिड़की पर अपनी ताकत दिखानी शुरू कर दी है। नितेश तिवारी के निर्देशन में बनी इस फिल्म को लेकर दर्शकों के बीच जबरदस्त एक्साइटमेंट नजर आ रही है। इसका असर एडवांस बुकिंग के शुरुआती आंकड़ों में भी दिख रहा है। खास बात यह है कि फिल्म ने पहले 24 घंटे की टिकट बिक्री में प्रभास की आदिपुरुष को काफी पीछे छोड़ दिया है। रिपोर्ट के मुताबिक, प्रभास की फिल्म आदिपुरुष की एडवांस बुकिंग रिलीज से केवल 5 दिन पहले खोली गई थी। शुरुआती 24 घंटों में आदिपुरुष के हिंदी वर्जन ने करीब 36 हजार टिकट बेचकर 1.40 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया था। वहीं, रामायण के लिए सिर्फ हिंदी वर्जन की टिकट खिड़की खोली गई और फिल्म ने पहले ही दिन 65,000 से ज्यादा टिकट बेच डाले। इस बिक्री से फिल्म ने 3.13 करोड़ रुपये का ग्रॉस कलेक्शन हासिल किया, जो आदिपुरुष की तुलना में लगभग 123 प्रतिशत ज्यादा है। हालांकि, आदिपुरुष ने तेलुगु बुकिंग खुलने के बाद अंत में 26 करोड़ रुपये की प्री-सेल्स दर्ज की थी, लेकिन रामायण की शुरुआत उससे कहीं ज्यादा धमाकेदार साबित हुई है। रामायण की एडवांस बुकिंग को लंबा वक्त दिया गया है। फिल्म 5 नवंबर 2026 को दुनियाभर के सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है। ऐसे में मेकर्स को दर्शकों के बीच चर्चा बढ़ाने और टिकट बिक्री को रफ्तार देने का मौका मिल रहा है। सैकनिल्क के मुताबिक, पहले दिन के लिए टिकटों की बिक्री 8.16 करोड़ रुपये के ग्रॉस आंकड़े तक पहुंच गई थी। इसमें ब्लॉक की गई सीटों को हटाने के बाद करीब 6.15 करोड़ रुपये की बुकिंग दर्ज की गई। रामायण के पक्ष में नजर आ रहे हैं। अब इंतजार 5 नवंबर का है। देखना ये होगा कि जितना बज इस फिल्म को लेकर बना है, क्या वो कमाई के मामले में वाकई सफल हो पाया।



हर लड़की को खूबसूरती पर होना चाहिए गर्व- तमन्ना भाटिया

फिल्म जेलर के गाने कवाला से लेकर स्त्री 2 के आज की रात तक में अपनी अदाओं और डांस मूव्स से हर किसी को झूमने पर मजबूर करने वाली ऐक्ट्रेस तमन्ना भाटिया इन दिनों चर्चा में हैं, अपनी फिल्म सिकंदर का मुकद्दर को लेकर। नीरज पांडे निर्देशित इस फिल्म में तमन्ना एक ऐसी सिंगल मदर बनी हैं जो हीरों की चोरी के आरोप में फंस जाती है। खास बातचीत-

इन दिनों हर तरफ आपके डांस नंबर्स का जलवा है, वो फिर कवाला हो या आज की रात, हर कोई इन पर झूम रहा है। आपके लिए डांस क्या है?

डांस से मेरा रिश्ता बहुत ही दिलचस्प रहा है, क्योंकि मैंने डांस सीखा नहीं है। मैं ट्रेंड डांसर नहीं रही हूं। मैं कभी डांस स्कूल नहीं गई। मैंने सेट पर ही डांस सीखा है तो मैं अपने डांस का श्रेय उन सभी कोरियोग्राफर्स को देना चाहूंगी, जिनसे मैंने सीखा। प्रभु देवा सर, राज सुंदरम सर, प्रेम रक्षित सर, वृंदा मैम और साउथ के बहुत सारे कोरियोग्राफर्स ही मेरे टीचर रहे हैं। उन्होंने मुझे फिल्म डांस समझने में काफी मदद की, क्योंकि फिल्म डांस बाकी से काफी अलग होता है। मेरा मानना है कि डांस शो ऑफ करने की चीज नहीं है कि मैं ये मुश्किल स्टेप कर सकती हूं। डांस ऐसा होना चाहिए कि उसे देखकर दूसरे का मन भी नाचने के लिए मचल जाए। मेरी कोशिश कभी ये नहीं होती कि देखो, मैं कितने मुश्किल स्टेप कर सकती हूं, मेरी कोशिश यही रहती है कि जब कोई मेरी ओर देखे और उसे मेरे अंदर की मस्ती या कोई एक्सप्रेशन पसंद आ जाए और उनका मन भी डांस करने का कर जाए और शायद इसीलिए लोग उससे कनेक्ट करते हैं।

फिल्मों के इन डांस नंबर्स पर अक्सर उत्तेजक के आरोप भी लगते हैं। आपकी इस पर क्या राय है?

अगर आप एक लड़की हैं तो अपने जेंडर का प्रतीक होना। अगर एक औरत बहुत ही खूबसूरत या औरत के जैसी लग रही है तो उसे सेक्सी बोलते हैं, तो इसका मतलब बहुत सरल है। बाकी किसी को घुमा फिराकर दूसरा मतलब निकालना है तो आप दस हजार मतलब निकाल सकते हैं, लेकिन मेरे हिसाब से औरतों को खुद में खूबसूरत महसूस करना चाहिए। मैं बहुत सी लड़कियों से मिलती हूं जो मुझे आकर बोलती हैं कि मैम, आप बहुत खूबसूरत हैं। आप तो रियल में बहुत इतनी सुंदर हैं, पर मेरा मानना है कि वे लड़कियां खुद बहुत सुंदर हैं। मेरा मानना है कि एक औरत को दूसरी औरत को सपोर्ट करना चाहिए और कहना चाहिए कि मुझे आप बहुत खूबसूरत लगती हैं और मैं दिल से ऐसा महसूस करती हूं। मैं इसे छिपाना नहीं चाहती। आपकी खूबसूरती पर आपको गर्व होना चाहिए तो ब्यूटी से जुड़ी कोई भी चीज जो मैं करती हूं, उसे लेकर मेरा नजरिया यही होता है।

फिल्म में आपकी किस्मत खूब नाच नचाती है, बहुत मुश्किलों से जूझने पर मजबूर करती है। असल जिंदगी में ऐसा मुश्किल दौर कौन सा रहा है, जिसे हराकर आप सिकंदर बनीं?



करियर के शुरुआत का दौर मैं कहूंगी कि थोड़ा मुश्किल था, क्योंकि जब मैंने काम करना शुरू किया था, तब मैं बहुत कम उम्र की थी और हमेशा ऐसे लोगों के साथ काम कर रही होती थी, जो मुझसे 20 साल बड़े थे। वो काफी अजीब होता था कि मैं इतनी छोटी थी और 20 साल बड़े मर्दों से घिरी रहती थी तो वो एक अलग किस्म की प्रजाति को समझने जैसा था। लोग इस बारे में बात नहीं करते लेकिन ऐक्टर होने का एक बड़ा हिस्सा ये होता है कि आप समझ सकें कि फिल्ममेकर आखिर क्या बनाना चाहता है और इसके लिए आप में वो समझ होनी चाहिए। मेरे लिए वो सोच विकसित करना और उनके दिमाग को समझना चुनौती थी। फिर, मैं साउथ में काम कर रही थी, जबकि खुद मुंबई से थी, तो वहां के कल्चर को समझना था, क्योंकि वो दुनिया ही बिल्कुल अलग थी। मेरा मानना है कि अगर आप किसी भी ऑडियंस के दिल तक पहुंचना चाहते हैं तो आपको उनकी जिंदगी, उनकी संस्कृति को समझना जरूरी है। इसके अलावा, हमारी जॉब में लोगों से इंटरैक्ट करने की कला भी आनी चाहिए, क्योंकि आपको अलग अलग लोगों के साथ मिलकर काम करना होता है। कैमरामैन, डायरेक्टर, कॉस्ट्यूम टीम, सब कुछ बताएंगे और इसमें सबसे बड़ी चीज है, अपने ईगो को आड़े ना आने देना। तभी आप बढ़िया साझेदारी कर पाएंगे। अगर आप ये सोचने लगे कि मुझे ज्यादा आता है तो आप वो नहीं कर पाएंगे, इन सब चीजों को उस छोटी उम्र में समझ पाना बहुत मुश्किल था। लेकिन मैं बहुत दृढ़ थी, इसलिए वो कर पाई, लेकिन बहुत मुश्किल होती थी। कई बार ऐसा हुआ कि दिग्गज लोग मुझसे कोई बात कर रहे हैं। मैं हां हां कहती रहती थी लेकिन मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा होता है, लेकिन मुझे ऐसा दिखाना है कि नहीं, मैं तो सब समझ रही हूं। (हंसती हैं) फिल्म मुकद्दर का सिकंदर करने की सबसे बड़ी वजह ये रही कि मुझे नीरज सर (डायरेक्टर नीरज पांडे) की फिल्में हमेशा से बहुत पसंद रही हैं। उनकी फिल्मों में जिस तरह बहुत ही आम लोगों की कहानी होती है, जो बहुत ही अजीब परिस्थिति में पड़ जाते हैं और फिर उन हालातों से वे कैसे जूझते और निकलते हैं, वो मुझे बहुत अच्छा लगता है। मुझे लगता है कि ये उनकी एक थीम है तो जब मैंने ये स्क्रिप्ट पढ़ी तो मुझे लगा कि यह एक अलग दुनिया है और हिंदी फिल्मों में निश्चित तौर पर लोगों ने मुझे अब तक ऐसे रोल में नहीं देखा है। फिर, यह साल बहुत ही दिलचस्प रहा है, क्योंकि बहुत अलग-अलग किस्म की फिल्में आई हैं। ऐसे में, इस तरह की फिल्म के लिए यह एक बेहतरीन समय है। यह एक तेज रफ्तार की हीस्ट थ्रिलर है। आप जैसे-जैसे इन किरदारों की जिंदगी को समझने लगते हैं, उनसे जुड़ते जाते हैं, तो मेरे लिए कुल मिलाकर यह एक बहुत अच्छा अनुभव रहा।